मानव जीवन एवं उसकी सफलता

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE- 247667 (U.P.)

मानव जीवन, मृत्यु एवं मस्तिष्क तीनों ही एक से बढ़कर एक आश्चर्य हैं। यदि हम अपने चारों ओर देखें तो कई तरह के लोग कई तरह की परिस्थितियों में दिखते हैं। कोई बहुत सुविधा में है तो कोई छोटी से छोटी चीज के लिए तरस रहा है। कोई विद्वान है तो कोई मूर्ख, कोई रोगी है तो कोई स्वस्थ। ऐसा नहीं कि अलग-अलग लोग ही बुद्धिमान, निरोगी एवं प्रसन्न रहते हों। एक व्यक्ति को अपने जीवन में बहुत सी परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। इस तरह जितने लोग हैं उतनी ही उनकी परिस्थितियां हैं, उतने ही तरह के सुख-दुःख हैं। सवाल यह है कि इतनी तरह की विभिन्नतायें जो हम शरीर, मन, गुण, ज्ञान, अनुभव एवं योग्यता के आधार पर देखते हैं, क्यों हैं? आइए, कुछ बातों पर विचार करें।

सर्वप्रथम, जीवन में जब अच्छी-बुरी परिस्थितयां आती हैं तो कर्म को ही प्रधान माना जाता है। हमारे पास शरीर, मन एवं वाणी हैं। इन तीनों से ही जीवन में कर्म करते हैं। कार्य करने से हमारे मन पर एक असर होता है और यह असर हमारे मस्तिष्क पर छप जाता है। यह क्रम जीवन में चलता रहता है। यदि हमने किसी की मदद की है तो यह हमारे मन पर असर जरुर डालेगा। इस प्रकार मानव अपने-अपने क्षेत्रों में निपुण एवं अनुभवी मस्तिष्क वाले व्यक्ति बन जाते हैं। शरीर, मन एवं वाणी सभी मनुष्यों में होते हुए भी उनमें क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार की अलग-अलग प्रवृत्तियां होती हैं। ये प्रवृत्तियां ही मनुष्य से कार्य करने का चुनाव कराती हैं और वे ही विभिन्न कार्यों को विभिन्न प्रकार से करने हेतु प्रेरित करती हैं। इन विभिन्न कार्यों से मन-मस्तिष्क के साथ-साथ मानव की चेतना शक्ति भी प्रभावित होती है। पिछले कार्य (अनुभव) के आधार पर नये कार्य चुने जाते हैं जो आगे किये जाने वाले कार्यों की पृष्ठभूमि (आधार) बन जाते हैं। इस तरह मानव एक निश्चित आयु बिताने के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है। अब यह सवाल उठता है कि बिताये गये जीवन में मनुष्य ने जो कुछ अच्छा-बुरा किया उसका मृत्यु के पश्चात् क्या मूल्य है एवं जीवन की सफलता क्या रही?

आधारित सफलता के लिए दो बातें विचारणीय हैं। एक तो जीवन में किये कार्यों का मृत्यु के बाद उस व्यक्ति के लिए क्या महत्व है तथा दूसरा समाज के लिए क्या महत्व है। जैसा हम मानते हैं कि मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है । जीवन में हम जो कुछ करते हैं उसका प्रभाव मन-मस्तिष्क एवं चेतना शक्ति (आत्मा) पर पड़ता है। मानव मस्तिष्क तो शरीर के साथ नष्ट हो जाता है परन्तु उस शरीर से जो चेतना निकलती है वह प्रभाव युक्त चेतना होती है। अब रही दूसरी बात - हमारे जीवन के कर्मों का समाज के लिए क्या मूल्य है? एक व्यक्ति ने पूरे जीवन भर सभी से अन्याय, धोखा व क्रूरता की है और दूसरा व्यक्ति ऐसा है जिसने प्रयत्न कर जीवन को श्रम, सहयोग, प्रेम व सदाचार से जीया है। हालांकि मृत्यु तो दोनों ही की होती है परन्तु दोनों के कार्यों का समाज पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। आज हम लोग जिन सुख सुविधाओं का आनन्द ले रहे हैं, यह सब उन लोगों की लगन, मेहनत, ईमानदारी एवं कष्ट सहने की क्षमता के ही परिणामस्वरुप संभव हुआ है जो अपने कार्य क्षेत्रों में लगनशील रहे एवं जिन्होंने कठोर परिश्रम से नये-नये अनुसंधान करके इस समाज को सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध कराये।

अतः स्पष्ट है कि जीवन में व्यक्ति जो कुछ उपभोग भोगता है वह अनेक लोगों की अनेक तरह की मेहनत व आदर्शों के कारण संभव है। मेहनत के रुप में जीवन एक अविरल प्रवाह है जबकि मृत्यु तो एक पड़ाव है। अन्ततः व्यक्ति जीवन में जो कुछ करता है उसका सामाजिक रुप में मूल्य तो होता ही है परन्तु उसके स्वयं के लिए भी मूल्य होता है। अतः आवश्यक है कि हम अपने इस वैज्ञानिक परिवार में रहते हुए अपनी मनसा, वाचा व शरीर से लगनपूर्वक मेहनत करते हुए अनुसंधान कार्यों को आगे बढ़ाते हुए समाज एवं स्वयं की चेतना शक्ति को प्रभावित कर अनुभवी बनाते चलें।

एस. एल. श्रीवास्तव, शोध सहायक